



ISSN Print: 2394-7500  
 ISSN Online: 2394-5869  
 Impact Factor: 8.4  
 IJAR 2020; 6(10): 1089-1092  
[www.allresearchjournal.com](http://www.allresearchjournal.com)  
 Received: 06-07-2020  
 Accepted: 13-09-2020

## डॉ० अंशु सरीन

एसोसिएट प्रोफेसर और  
 विभागाध्यक्षा, बी०एड० विभाग,  
 गोकुल दास हिन्दू कन्या  
 महाविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर  
 प्रदेश, भारत

## डॉ० गीता परिहार

एसोसिएट प्रोफेसर और  
 विभागाध्यक्षा, संस्कृत विभाग,  
 गोकुल दास हिन्दू कन्या  
 महाविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर  
 प्रदेश, भारत

## भारत की ऋतु परम्परा : वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ० अंशु सरीन, डॉ० गीता परिहार

### सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में हमने ऋतुओं के विषय में अध्ययन किया है। जिसमें हमने षडऋतु, द्वादश ऋतु (बारह मासा) में वर्षाकाल का विवरण संक्षिप्त रूप में दिया। वस्तुतः भारत एक कृषि प्रधान देश होने के कारण यहाँ का किसान खेती पर आधारित रहते हैं, उस पर वर्षा का इन्तजार करते हैं। इस वर्षाकाल की ऋतुओं के साथ गणना करके आज के मौसम विज्ञानी वर्षा की घोषणा या मौसम सम्बन्धी सूचनाएँ देते हैं। आज इस क्षेत्र में शिक्षा की जागरूकता की आवश्यकता है। वस्तुतः इस क्षेत्र में हमारे ऋषि-मनीषियों ने ठीक-ठीक गणना कर ऋतुओं का काल निर्धारण कर दिया था। पर समय की माँग को देखते हुये इसकी शिक्षा की व्यवस्था सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र में होनी चाहिये। यह विषय इतना व्यापक है कि कई क्षेत्रों से जुड़ा है जिसका ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। यहाँ हमने इसका अध्ययन सार-संक्षेप में किया है। जबकि यह शोध-परक विषय है।

**मुख्य शब्द :** संवत्सर, सहस्य, तपस्य, इष, नभस् सायन, निरयन, मार्गशीर्ष, इडावत्सर, उद्वत्सर

### प्रस्तावना:

भारतीय ऋतु परम्परा का प्रारम्भ मानव की उत्पत्ति और विकास के साथ रहा है। ऋतुओं का सम्बन्ध केवल भौतिक जगत से ही नहीं है अपितु आर्थिक जगत से भी उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। भारत के प्राचीन ऋतु वेत्ताओं का कहना है कि 'अन्न ही जगत का प्राण है' और अन्न वर्षा के अधीन है। अथवा यह कह सकते हैं कि वर्षा ऋतुओं के अधीन है, इस प्रकार ये ऋतुएँ राष्ट्र की जीवन हैं। यह कथन वास्तव में पूर्ण रूप से युक्ति संगत है। आज विश्व के सामने सबसे बड़ी समस्या अन्न की है, ऋतुओं के समय में फेर-बदल होने के कारण खाद्योत्पादन दिन-दिन गिरता जा रहा है। इसका उदाहरण हम विगत 6-7 वर्षों से ऋतुओं के समय में एक विचित्र एवं असम्भावित परिवर्तन हो रहे हैं, और ऋतुओं का आरम्भ ठीक अपने निर्धारित क्रमानुसार नहीं हो रहा है, जैसा कि होना चाहिये। निर्धारित सम से पूर्व वर्षा ऋतु का आगमन या निर्धारित समय से बाद में 'शरद-ऋतु' में वर्षा ऋतु का आगमन, अभूतपूर्व शीत लहरी आदि ऐसी अत्प्रत्याशित घटनाओं को देखकर विद्वानों का ध्यान इस ऋतु विषयक की ओर गया। केवल भारतीय विद्वान ही नहीं अपितु देश-विदेशों के विद्वान भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस समस्या से चिन्तित हैं और अध्ययन कर रहे हैं और कारण ढूँढ रहे हैं। अस्तु यह कहना असंगत न होगा कि अन्न का उत्पादन गिरता जा रहा है और जनसंख्या में दिनों-दिन बढ़ोत्तरी होती जा रही है। भोजन, वस्त्र और मकान ये तीन चीजें जीवन की सर्वप्रथम एवं अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं।

इस सम्बन्ध में यह स्वीकार करना ही होगा कि आधुनिक वैज्ञानिक, ऋतुओं पर विजय पाने की चेष्टा में बड़े-बड़े बाँध और नहरें बनवा रहे हैं, जिनके प्रति यह कहा जा सकता है कि मनुष्य प्रकृति पर निर्भर नहीं रहेगा। परन्तु ऐसा सोच का युक्ति संगत नहीं है, हों यह कहना ठीक रहेगा कि कुछ सीमा तक मानव प्रकृति के सहारे नहीं बैठ सकेगा। लेकिन यह तथ्य भी निविवादित सत्य है कि प्राकृतिक वर्षा और सिंचित जल में काफी अन्तर होता है जो प्रभाव कृषि पर प्राकृतिक वर्षा का होता है वह सिंचित जल में कदापि नहीं होता क्योंकि इंच-इंच भूमि को सिंचित करने की क्षमता वर्षा में है वह मानवकृत साधनों से सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त और भी बिन्दु हैं जिन पर विचार करना अनिवार्य भी होगा। वर्षा न होने पर आधुनिक साधनों से या थोड़ी बहुत सिंचाई की जा सकती है, किन्तु अविषर्षा से बचने का क्या उपाय होगा? कृषि को क्षति पहुँचाने वाली ये अतिवृष्टि, व्यापक रूप से जन-धन को क्षति पहुँचाती प्रलयकारी बाढ़ें तथा पाला, हिमपात जिसके केवल प्रकृति ही कारण है। इससे बचने का कोई साधन मानव के पास नहीं है।

अतएव इससे बचने का एक मात्र साधन यही हो सकता है कि हम अपनी योजनाओं के साथ-साथ ऋतुओं पर भी अनुसंधान कर और उस अनुसंधान के द्वारा ऋतुओं एवं मौसम के बारे में सही-सही

### Corresponding Author:

## डॉ० अंशु सरीन

एसोसिएट प्रोफेसर और  
 विभागाध्यक्षा, बी०एड० विभाग,  
 गोकुल दास हिन्दू कन्या  
 महाविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर  
 प्रदेश, भारत

भविष्यवाणी कर सकें जिसके आधार पर हम आने वाली प्राकृतिक आपदाओं से सावधान हो सकें और अपनी रक्षा कर सकें।

अस्तु अब हम भारतीय ऋतु विज्ञान को ऐतिहासिक दृष्टि कोण से भी अध्ययन करेंगे। वैदिक साहित्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि भारतीयों को ऋतुओं का ज्ञान वैदिक काल से ही था, यहाँ तक कि विश्व के इतिहास में ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन हैं और इस आधार पर हम कह सकते हैं कि भारतीयों को प्रथम ऋतुवेत्ता की उपाधि प्राप्त है। सृष्टि के आरम्भ से ही मानव ने अपने को अनगिनत सितारों की छाया में पाया, और यहीं से उसमें अनुसंधान की भावना का उदय हुआ, और इस क्षेत्र में उन्होंने इतना गहरा अध्ययन कर डाला कि मानो सारा ब्रह्माण्ड उन्हें किसी आँवले के छोटे फल की तरह अपने करतल पर रखा हो।

ऋग्वेद सेहिता में वर्ष के बारहमास, 360 दिन का उल्लेख है। इसी प्रकार तैत्तरीय संहिता में मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस्, नभस्य, इस ऊर्ज, सहस्य, तपस, तपस्य, इन बारह मासों के अलावा अधिमास और क्षयमास का उल्लेख आया है। आगे ग्रंथ में इनका विशद वर्णन भी है यथा—

1. मधु और माधव मास की — वसन्त ऋतु
2. शुक्र और शुचि मास की — ग्रीष्म ऋतु
3. नभस् और नभस्य मास की — वर्षा ऋतु
4. इस और उर्ज मास की — शरद ऋतु
5. सहस् और सहस्य मास की — हेमन्त ऋतु
6. तपस् और तपस्य मास की — शिशिर ऋतु

इसी प्रकार इन ऋतुओं का उल्लेख शुक्ल यजुर्वेद संहिता (वाजानसेयी संहिता) में आया है। अस्तु इन महीनों के ये नाम आजकल चैत्र-वैशाख में परिवर्तित हो गये हैं।

तैत्तरीय ब्राह्मण में हेमन्त और शिशिर नामक दो ऋतुओं को एक ही ऋतु मानकर वर्ष में पाँच ऋतुएँ मानी गयी हैं। कहीं-कहीं पर दो-दो ऋतुओं को एक ऋतु मानकर गर्मी वर्षा और जाड़ा मुख्य तीन ऋतुएँ भी मानी गयी हैं।

आचार्य वशिष्ठ ने भी वर्ष को दूसरी प्रकार से इन ऋतुओं तीन भागों में माना है। यथा—

1. अग्नि ऋतु, (ग्रीष्म)
2. सूर्य ऋतु (वर्षा),
3. चन्द्रमा ऋतु (जाड़ा)

वस्तुतः आचार्यों एवं विद्वानों ने बसन्त ऋतु को ही प्रथम ऋतु माना है। तैत्तरीय ब्राह्मण में बसन्त ऋतु को वर्ष का शीर्ष तथा ऋतुओं का मुख कहा है।

अस्तु परिवर्ती आचार्यों में गर्ग, वशिष्ठ, पराशर, वत्स, सिद्ध सेन, असित देवल, भृगु, बृहस्पति, मनु, मय सारस्वत, नारद, अत्रि, ब्रह्मा आदि आचार्य हुये हैं, इनका समय विक्रम संवत् से पूर्व वैदिक युग से पुराण युग तक ही माना जाता है और इन आचार्यों ने ऋतु विज्ञान को एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया। इनमें से कुछ आचार्यों के ग्रंथ उपलब्ध होते हैं, परन्तु अधिकांशतः ग्रंथ पराधीनता के युग में नष्ट हो गये। इस विषय में वराह मिहिर की वृहत्संहिता 'भट्टोत्पली टीका' से ज्ञात होता है कि ये ऋषि वैज्ञानिक तत्वों से भली-भाँति परिचित थे। मेघों की उत्पत्ति, धूम, ताप वायु और जलकणों के मिश्रण से होती है, सूर्य की किरणों से शोषित होने पर ये भाप में बदलकर बादल बनते हैं। उन्हें ये भी पता था कि भूमि के बाहर वायु की कक्षा है; गर्जन गर्धव-नगर, उल्का पात, कुण्डल (परिवेष), बिजली, इन्द्र धनुष तथा मेघ इसी वायु की कक्षा में होते हैं। इन ऋषि आचार्यों के बाद के आचार्यों में अगर किसी का नाम इस विषय पर उल्लिखित होता है तो वह नाम आचार्य वराह मिहिर का है, जिन्होंने इन पूर्व आचार्यों के सिद्धान्तों का सार लेकर अपने ग्रंथ 'बृहत्संहिता' के द्वारा उस ज्ञान को सुरक्षित रखा। वस्तुतः वराह

मिहिर के इस ग्रंथ के बाद आज तक कोई अन्य ग्रंथ इस विषय में नहीं बना। शिक्षा के क्षेत्र में इनका अध्ययन होना अभी शेष है। अब हम आगे अब ऋतुओं के मूलधार पर संक्षिप्त सार कहेंगे वस्तुतः ऋतुओं के मूल आधार सूर्य, चन्द्रमा तथा सौर मण्डलीय ग्रह ही हैं। इन ऋतुओं में प्रायः जो भी परिवर्तन होते हैं वे सौर मण्डलीय ग्रहों विशेषकर सूर्य — चन्द्रमा पर आधारित हैं, भिन्न-भिन्न समय में सूर्य, चन्द्र तथा अन्य ग्रहों की स्थिति से पृथ्वी पर भिन्न मौसम (ऋतुओं) में परिवर्तन होता रहता है और आश्चर्य जनक तथ्य यह है कि इन क्रियाओं को हमारे ऋषि ऋतुवेत्ता जानते थे, तथा ये तथ्य आज के भौतिक विज्ञा भी स्वीकार करते हैं। अस्तु सामान्यतया मौसम में परिवर्तन के चार कारण गाने जाते हैं यथा—

1. तापः— इसमें कमी या वृद्धि होना सूर्य पर आधारित है।
2. वायुमण्डलीय दबाव — वायुमंडल ताप पर आधारित है। सूर्य से जो गर्मी मिलती है, पृथ्वी उसे वायुमंडल में दे देती है इससे हवा के दबाव में परिवर्तन होता है। पृथ्वी को सूर्य से किस मात्रा में ऊष्मा प्राप्त होगी यह सूर्य और पृथ्वी की स्थिति तथा भिन्न-भिन्न स्थानों के धरातल पर निर्भर होता है।
3. वायु की दिशा— यह वायुमंडल के दबाव निर्भर है।
4. आर्द्रता या नमी— यह वर्षा, भाप, ऊष्मा, हवा आदि पर निर्धारित है, इसमें भी सूर्य की उष्मा और हवा मुख्य कारण हैं।

इस प्रकार हमने इस संक्षेपीय अध्ययन में देखा कि सूर्य, चन्द्रमा और सौरमंडल के ग्रहों की स्थिति पर निर्भर है। जैसा कि सूर्य की ओर पृथ्वी के झुकाव में परिवर्तनों के कारण, गर्मी, सर्दी, बरसात जैसे परिवर्तन होते हैं, वैसे ही वर्षा, हवा, धुन्ध, आँधी आदि सामान्य मौसम परिवर्तन सूर्य पर ही आधारित है। अब हम ऋतुओं को रूपरेखा पर ध्यान देंगे, ये मुख्यतः दो भागों में विभक्त है यथा—गणतीय सिद्धान्त और ऋतु परीक्षण सम्बन्धी सिद्धान्त। इस गणतीय सिद्धान्त में ऋतु सिद्धान्त के परीक्षण की आवश्यकता नहीं होती। गणतीय आधार से वर्ष में किसी भी दिन या महीने अथवा सैकड़ों वर्ष आगे एवं पीछे किस दिन ग्रहों की स्थिति क्या स्थिति होगी। यह जाना जा सकता है हमारे महर्षियों ने प्रत्यक्ष परीक्षण और अनुभव के आधार पर कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित किये। कि ग्रहों की ऐसी स्थिति होने पर मौसम में यह परिवर्तन होगा। जैसे वसन्त काम्पात (21 मार्च) से सूर्य की स्थिति के कारण गर्मी का बढ़ना और शरद सम्पात (23 सितम्बर) से सर्दी का बढ़ना सुनिश्चित है। किन्तु गणतीय आधार को लेकर जो तथ्य निकलेंगे वह अधूरे तथ्य ही होंगे, क्योंकि यह एक माध्यमिक तथ्य है। इसका कारण गणतीय गणना से समस्त विश्व के मौसम की गणना होगी — यह निर्विवाद सत्य है कि समस्त पृथ्वी के धरातल में एक सा मौसम हो यह असम्भव है। इसमें, पृथ्वी के रंग, बनावट, मिट्टी, चट्टानों की किस्में और उनकी संरचना के कारण ऊष्मा शोषण भी पृथक-पृथक होगा।

अस्तु आगे चलकर इस विषय की तीन शाखायें बनी यथा—वार्षिक वर्षा ज्ञान के सिद्धान्त, 2. मासिक या पाक्षिक वर्षा का ज्ञान तथा 3. दैनिक वर्षा का ज्ञान। वस्तुतः ये तीन सिद्धान्त आधुनिक वैज्ञानिक भी मानते हैं। वस्तुतः ये तीन सिद्धान्त आधुनिक वैज्ञानिक भी मानते हैं। अब प्रश्न उठता है कि वसन्त ऋतु का आरम्भ कब से माना जाय, क्योंकि बसन्त ऋतु सबसे पहले आती है, इस प्रकार जिस तिथि से बसन्त ऋतु सबसे पहले आती है, इस प्रकार जिस तिथि से बसन्त ऋतु प्रारम्भ होनी है, उसी तिथि से नया वर्ष भी आरम्भ होगा इसमें भी विद्वानों का मतभेद है—प्रथम मास सौर लिया जाय अथवा चान्द्र सौर और दूसरा सायन मान लिया जाय था निरयन मान। ऋतुओं की गणना में सौर मासों का ही प्रयोग होना चाहिये न कि चन्द्रमास का क्योंकि चन्द्रमास कभी आगे होता है या कभी पीछे। इसका कोई नियत समय नहीं है। वस्तुतः ऋतुएँ सूर्य पर आधारित हैं। यहाँ पर

स्पष्ट होना ठीक रहेगा कि सौर मास 365 और चान्द्र मास 354 दिनों का होता है, जिससे प्रतिवर्ष 11 दिनों का अन्तर होता है, जिसे चान्द्र मासों में तीसरे वर्ष अधिमास जोड़ कर समानता लाते हैं। वर्ष में वारह मास काव लाया गया है। क्योंकि संवत्सर 12 मासों का होता है। इसके अतिरिक्त दूसरी समस्या सम्पात चलन की है। सायन हो या नियमन। अर्थात् आकाशीय गणना प्रथम बिन्दु किस स्थान से माना जाय। कल्प (सृष्टि) के आरम्भ में जिस बिन्दु पर सम्पात हुआ था, उसी बिन्दु को आकाशीय गणना का प्रथम बिन्दु (रेखाश) मानकर आकाशीय गणना को ही निरयन गणना कहा जाता है। यहाँ यह स्पष्ट करना है कि सम्पात हो होते हैं, बसन्त सम्पात और शरद सम्पात। जिस दिन, दिन और रात बराबर होते हैं उस सम एक सम्पात पर पृथ्वी होती है और दूसरे सम्पात पर पृथ्वी से सूर्य दिखाई देता है। ऐसा वर्ष में दो बार होता है जो आजकल 21 मार्च और 23 सितम्बर को होता है। इसमें 21 मार्च को पृथ्वी शरद सम्पात पर होती है, और पृथ्वी से सूर्य जिस बिन्दु पर दिखाई देगा वह बिन्दु ही बसन्त सम्पात कहलाता है और यहीं से आकाशीय गणना होती है।

यहाँ हम सौर मासों का रूप की एक नामावली प्रस्तुत हैं— यथा

वैदिक नाम –	आधुनिक
1. मधु	चैत्र
2. माधव	वैशाख
3. शुक	जेष्ठ
4. शुचि	आषाढ
5. नभस्	श्रावण
6. नभस्य	भाद्र पद
7. इष	आश्विन
8. उर्ज	कार्तिक
9. सहस	मार्गशीर्ष
10. सहस्य	पौष
11. तपस	माघ
12. तपस्य	फाल्गुन

इसके अतिरिक्त हम सांवत्सर के विषय में थोड़ा सा अध्ययन करेंगे। संवत्सर सिद्धान्त में संवत्सरों की वर्ष संख्या के आधार पर वर्षा की सम्भावना व्यक्त की जाती है। वस्तुतः पांच संवत्सर है यथा—

1. संवत्सर,
2. परिवत्सर,
3. इअवत्सर,
4. अनुवत्सर,
5. उद्वत्सर।

जो संवत्सर, 'संवत्सर की श्रेणी में आता है उसमें वर्षा सामान्य होती है। अर्थात् न बहुत अधिक और न कम। 'परिवत्सर' की श्रेणी में आने वाले वर्ष में वर्ष के पूर्वार्द्ध में अर्थात् संवत्सर के आरम्भ से 6 महीनों में अच्छी वर्षा होती है और बाद के 6 महीनों में साधारण वर्षा होती है। 'इडावत्सर' वाले वर्ष में काफी पानी बरसता है। 'अनुवत्सर' वाले वर्ष में पूर्वार्द्ध में कम वर्षा होती है तथा उत्तरार्द्ध के 6 महीनों में अच्छी वर्षा होती है। और 'उद्वत्सर' नामक संवत्सर में वर्षा कम होती है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि ऋतुओं में क्या परिवर्तन और क्या फल होगा। भारत चूँकि कृषि प्रधान देश है, यहाँ की कृषि का अधिकांश भाग ऋतुओं पर निर्भर है, जिसमें वर्षा ऋतु का विशेष महत्व है। चूँकि ऋतुओं पर शिक्षा के क्षेत्र में काफी सम्भावनाओं दिखाई देती है। शिक्षक और शिक्षार्थी को इसकी जानकारीयों विश्वविद्यालयी स्तर पर दी जा रही हैं जिससे छात्रों में इसकी रुचि जाग्रत हो रही है और नौकरी की सम्भावनायें भी सरकारी। गैर सरकारी क्षेत्रों में बढ़ती जा रही है। आज के युग में लोग इस क्षेत्र की ओर ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। हालाँकि यह क्षेत्र एक विराटता लिये हुये है जिसमें शिक्षा के कई क्षेत्र

जुड़ते हैं जैसे—भूगोल, कृषि, ज्योतिष, गणित, आदि। आज विज्ञान जिस चरम सीमा की ओर बढ़ रहा है उससे इस क्षेत्र में काफी सटीक जानकारीयों उपलब्ध होने की सम्भावनायें बढ़ गई हैं। वास्तव में ऋतु विज्ञान एक बड़ी ही रोचक और अध्ययनशील विषय है जिसमें छात्र अपने कैरियर को आगे बढ़ा सकते हैं। इस के विषय यह कहना गलत नहीं होगा कि इस क्षेत्र में अपार सम्भावनायें हुयी हैं जिन शोध अनुसंधान आवश्यक हैं। यहाँ यह तथ्य अपने आप में विस्मयकारी है कि आज का विज्ञान जिन चीजों की गणना अब कर रहा है, उसकी गणनायें भारतवर्ष में बहुत पहले ही ऋषि मुनियों ने सटीकता के साथ कर रखी थी कि ब्रह्मांड कैसा है, सूर्य चन्द्र किस प्रकार बने हैं, हमारे ब्रह्मांड में कितने तारे, और ग्रह, परिग्रह हैं। अपितु इससे आगे भी महर्षि व्यास ने अन्य ब्रह्मांडों के विषय में जान लिया था। जिसे आज का विदेशी वैज्ञानिक खोज रहा है।

यह बड़े खेद और दुःख का विषय है कि हम आंग्ल संस्कृति से प्रभावित होकर अपने ऋषि-मुनियों के ज्ञान पर ध्यान नहीं देते हैं।

अस्तु अब हम इन ऋतु सम्बन्धी कुछ लोकोक्तियों का यहाँ उद्धरण देगे यथा—

संवत्सर

संवत्सर ए गेह है तिसके चारों थंभ।

जे चाहे थरिको इयो इनबिन घर दुरलंभ।।

चारों हो वहिं थंभ इहु तौ बरसत चौमास।

जो थंभा होवे नहीं, नहीं बरसत तिस मास।।

चैत्य

चैत्रमास न बीजुली बादल नेह न गाज।

पवन अँधेरी ना चलै सभी मनो हुई राज।।

वैशाख

वैशाखें वादर पचरंग। अथवा झमेके बीजी अंग।

तो अनेक धन जग बरसाई। सावन मँह बहुत अन उपजाई।।

जेष्ठ

ज्येष्ठ पक्ष पहिले (शुक्ल) विषै गाजवीजल सरकार।

थोरा होवै चौपदा धने मेरे पदचार।

आषाढ

आषाढैवदि (श्रावण) एकनि गाज बीज पुनि वाइ।

सावन यादव सूकत श्वेती मति न कराइ।।

आषाढै बादल करै चल हे उत्तर वायु।

तो जानो कार्तिक थकी सावन महि वर वायु।।

श्रावण

सावन वदि दिन चौथ के निर्मल होई अकास।

तऊ अठारायास महि जलधर करे विकास।।

भाद्र पद

भाद्रव शुद्धि की पंचमी जे धन नहिं बरसन्त।

तो निहचै सम जानियो, जलधर हूवो अन्त।।

कार्तिक

कार्तिक शुदी द्वितीया दिने चढत चन्द्र जो लाल।

पश्चिम दिशि बादल गरज तो मेटल जगकाल।।

गरम रहयो तिन समय को विघ्न न होवै कोय।

तो वरषै जलधर दुनी कोई दुखी न होय।।

मार्ग शीर्ष

मंगाशिर बदी जु पंचमी, घटा होत चहुं ओर।

बरषत वर्षा लातणै चार मास जल जोर।

पौष

पौष शुदी छठ ग्यारस पूजू जानिये।

घरी (घड़ी) सपूरण होहिं तो ए पिछानिये।।

माघ

माघ सुदी की सातमै कनियों बादल होय।

समय भलो तो जानिये जिहिं तिहिं जलधर जोइ।।

उपरोक्त लोकोक्तियों के माध्यम से बारह मासों (ऋतुओं) में वर्षा की क्या स्थिति होगी यह दर्शाया गया है। कृषि प्रधान देश होने से कृषक अधिकांशतः वर्षा पर ही आधारित होते हैं। आज भी खेती वर्षा पर ही आधारित है। ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण के चलते ऋतुएँ अपने निर्धारित समय से हट रही हैं। मानव को इस ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

**संदर्भ:-**

1. यजुर्वेद – पं० श्री राम शर्मा, संस्कृति संस्थान, बरेली
2. ऋग्वेद – 1- 164-11, 1-164-48 – पं श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान – बरेली-1994।
3. तैत्तरीय –संहिता – 1-414
4. तैत्तरीय –संहिता – 1-414
5. शतपथ- ब्राह्मण – 3-4-17
6. तैत्तरीय –ब्राह्मण – 31-10-1
7. वही – 31-10-1
8. ऋग्वेद संहिता – 1-25-8, 1-164-11।